International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 12-14

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 12-14
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-01-2017
Accepted: 10-02-2017

डॉ. विवेक शर्मा
पीएच.डी. संस्कृत, विशिष्ट–शास्त्री
गाँव– मसौली, तह.–जोगिन्द्र नगर
जिला–मण्डी, हिमाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. विवेक शर्मा
पीएच.डी. संस्कृत, विशिष्ट–शास्त्री
गाँव– मसौली, तह.–जोगिन्द्र नगर
जिला–मण्डी, हिमाचल प्रदेश, भारत

रामायणकालीन लोकजीवन पर देवताओं का प्रभाव

डॉ. विवेक शर्मा

प्रस्तावना

वाल्मीकि रामायण संस्कृत का आदि काव्य है – 'रामायणं हि आदिकाव्यं वाल्मीकिश्च आदिकविः' यह उक्ति साहित्य जगत् में इस रचना एवं रचनाकार दोनों को ही प्रथम स्थान पर विराजित करती है| देवी-देवताओं की उत्पत्ति मानवसमाज के कल्याण के लिए हुई है उनका मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पडता है| सामाजिक प्राणियों को सन्मार्ग पर ले जाने, नीति पर चलाने, धर्म का पालन कराने तथा सदाचार का आचरण कराने के लिए देवताओं की उत्पत्ति हुई | रामायणकाल में मनुष्यों की देवताओं पर बड़ी आस्था थी, कोई भी काम शुरू करने से पहले अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए अथवा किसी भी अनिष्ट से बचने के लिए देवताओं की पूजा की जाती थी या देव स्मरण किया जाता था | ऋषि-मुनि भी कई वर्षों तक तपस्या करके अनेक दिव्य शक्तियाँ और सिद्धियाँ प्राप्त करते थे और उनका प्रयोग जनकल्याण के लिए करते थे | प्रस्तुत खोज में रामायणकालीन लोकजीवन पर देवताओं का प्रभाव रहा है, इसी विषय को दर्शाया गया है |

देवी–देवता हर मनुष्य के जीवन को विविध प्रकार से प्रभावित करते आए हैं। इस संसार का सृजक, नियन्त्रक, पालक एवं संहारक परम ब्रह्म है तो फिर देव प्रभाव को कैसे नकारा जा सकता है। देववर्ग के प्रति आस्था एवं श्रद्धा मानव जीवन की आधारशिला रही है। प्रत्येक काम में देवता सहायक रहा है। रामायण कालीन समाज पर देवताओं का गहरा प्रभाव था। यह देव प्रभाव न केवल व्यक्ति विशेष पर; अपितु परिवार–समाज, शत्रु–मित्र, नारी–पुरुष, राजा–प्रजा, गुरु–शिष्य सब पर देखने को मिलता है। लोगों के जीवन में देवी–देवताओं का विशेष महत्व था। मानव किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले, पर्वों–त्यौहारों और अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए देवी–देवताओं का स्मरण करता था। अयोध्या के राजा दशरथ ने पुत्र–प्राप्ति के लिए अश्वमेध यज्ञ द्वारा देवता का यजन किया था।[1] प्रातः देवताओं का स्मरण तथा पूजन करके ऋषि–मुनि अपना दूसरा कार्य करते थे,[2] जिससे यह प्रतीत होता है कि लोग किसी भी कार्य को करने से पूर्व देवता की पूजा–स्तुति किया करते थे और देवता उनकी इच्छा–पूर्ति करते थे। रामायणकाल में देवता आस्था का स्रोत था, क्योंकि लोग उन पर निर्भर होते थे। वे अग्निदेव को देवताओं का मुख मानते थे, शास्त्रविधि से उनकी पूजा करते थे तथा उनको हविष्य प्रदान करते थे।[3] उनकी मान्यता थी कि अग्निदेव सभी देवताओं को हविष्य अर्पित करते हैं। लोग अपना समय व्यर्थ न गंवाकर देव पूजा में व्यतीत करते थे। वे किसी भी कार्य को सिद्ध करने के लिए उनका जप और पाठ किया करते थे। अगस्त्य मुनि ने राम की विजय के लिए उन्हें 'आदित्यहृदय' नामक स्तोत्र का जप करने के लिए कहा था और उन्हें संपूर्ण मंगलों का भी मंगल, चिन्ता, शोक को मिटाने वाले और आयु को बढ़ाने वाले सूर्य का पूजन और मन्त्रों का जप करने का आदेश दिया था –

---

1 वाल्मीकि रामायण, 1.8.8: मम लालप्यमानस्य सुतार्थं नास्ति वै सुखम्। तदर्थं हयमेधेन यक्ष्यामीति मतिर्मम॥

2 वही, 1.14. 5: अभिपूज्य तदा हृष्टाः सर्वे चक्रुर्यथाविधि।
प्रातः सवनपूर्वाणि कर्माणि मुनिपुङ्गवाः॥

3 वही, 1.37.16

''आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः॥
हरिदश्व सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान्॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिंगलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वोमहातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥''[1]

अर्थात् आदित्य (अदिति पुत्र), सविता (जगत् को उत्पन्न करने वाला), सूर्य (सर्वव्यापक), खग (आकाश में घूमने वाला), पूषा (पोषण करने वाला), गभस्तिमान् (प्रकाशमान), सुवर्णसदृश, भानु

1. वाल्मीकि रामायण, 6.105.10-15

(प्रकाशक), हिरण्यरेता (ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का बीज), दिवाकर (रात्रि का अन्धकार दूर
करके दिन का प्रकाश फैलाने वाला), हरिदश्च (दिशाओं में व्यापक अथवा हरे रंग के घोड़ों वाला), सहस्रार्चि (हजारों किरणों से सुशोभित), सप्तसप्ति (सात घोड़ों वाला), मरीचिमान् (किरणों से सुशोभित), तिमिरोन्मथन (अन्धकार का नाश करने वाला), शंभु (कल्याण के उद्गमस्थान), त्वष्टा (भक्तों का दुःख दूर करने अथवा जगत् का संहार करने वाला), अंशुमान् (किरण धारण करने वाला), हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा), शिशिर (स्वभाव से ही सुख देने वाला), तपन (गर्मी पैदा करने वाला), अहस्कर (दिनकर), रवि (सबकी स्तुति के पात्र), अग्निगर्भ (अग्नि को गर्भ में धारण करने वाला), अदितिपुत्र, शंख (आनन्दस्वरूप एवं व्यापक), शिशिरनाशन (शीत का नाश करने वाला), व्योमनाथ (आकाश का स्वामी), तमोभेदी (अन्धकार को नष्ट करने वाला), ऋग् यजुः और सामवेद के पारगामी, घनवृष्टि (घनी वृष्टि के कारण), अपां मित्र (जल को उत्पन्न करने वाला), विन्ध्यवीथीप्लवंगम (आकाश में तीव्र वेग से चलने वाला), आतपी (घाम उत्पन्न करने वाला), मण्डली (किरण समूह को धारण करने वाला), मृत्यु (मौत का कारण), पिंगल (भूरे रंग वाला), सर्वतापन (सब को ताप देने वाला), कवि (त्रिकालदर्शी), विश्व (सर्वस्वरूप), महातेजस्वी, रक्त (लाल रंग वाला), सर्वभवोद्भव (सबकी उत्पत्ति के कारण), नक्षत्र, ग्रह और तारों के स्वामी, विश्वभावन (जगत् की रक्षा करने वाला), तेजस्वियों में भी अति तेजस्वी तथा द्वादशात्मा (बारह स्वरूपों में अभिव्यक्ति) इन नामों से प्रसिद्ध सूर्यदेव का पूजन और जप करने के लिए अगस्त्य मुनि ने राम को कहा था। इससे यह स्पष्ट होता है कि रामायणकाल में व्यक्ति सर्वकल्याण एवं मनोवांछित फल प्राप्त करने के लिए देवी-देवता की पूजा-जप-पाठ आदि किया करते थे। सूर्य देव प्रत्यक्ष होने के कारण सभी कर्मों का साक्षी माना गया था। सीता ने भी अपने सतीत्व की परीक्षा देते हुए अग्निदेव को जगत् का साक्षी मानते हुए उनसे अपनी रक्षा करने के लिए प्रार्थना की थी। 1

रामायणकाल में लोक-जीवन में देवी-देवताओं का स्थान सार्वकालिक सर्वद्रष्टा के रूप में था। लोगों का देवों पर अटल विश्वास था। कौशल्या ने राम की मंगलकामना के लिए विष्णु की पूजा की थी। 2 अगस्त्य मुनि ने विष्णु भगवान् की तपस्या करके सुवर्ण और हीरे जड़ा हुआ महान् दिव्य धनुष प्राप्त किया था। 3 लोग देवों को पापों का दण्ड देने वाला मानते थे। उस समय लोग अभीष्ट सिद्धि, वर प्राप्ति तथा विपदाकाल में रक्षा के लिए देवी-देवता की स्तुति, उपासना तथा तप करते रहते थे। राजा जनक ने यज्ञ करके वरुण देव को प्रसन्न किया था और वरुण देव ने उन्हें दो दिव्य धनुष, दो दिव्य अभेद्य कवच, अक्षय बाणों से भरे हुए दो तरकस तथा दो सुवर्णभूषित खड्ग प्रदान किये थे। 4 इससे पता चलता है कि लोगों का यह अटूट विश्वास था कि देवार्चन से मनुष्य की सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है तथा सभी संकट टल जाते हैं। जब हनुमान् सीता को ढूँढने गए थे तब उन्होंने वायुदेव और सभी देवताओं को नमस्कार करके अशोकवाटिका में प्रवेश किया था। 5 कार्तिकेय में भक्तिभाव रखने वाले प्राणी दीर्घायु और पुत्र-पौत्रों से संपन्न होते थे। 6 इन्द्र वर्षा करके लोगों का जीवन सुरक्षित करते थे। 7 इससे ज्ञात होता है कि देवता भी लोगों के कल्याण में सदा तत्पर रहते थे और उनकी इच्छापूर्ति करते थे।

1. वाल्मीकि रामायण,6.116.26
2. वही, 2.20.14
3. वही, 3.12.32
4. वही, 2.31.29-30
5. वही, 5.13.58-59
6. वही, 1.37.32
7. वही, 2.12.104

रामायणकाल में लोग देवों-ऋषियों में अत्यधिक आस्था रखते थे और वे कभी भी उनकी बात को टालते नहीं थे तथा उसे अविचार्य मानते थे। पुलस्त्य ने जब हैहयराज अर्जुन से दशानन रावण को छोड़ने के लिए कहा, 1 तो उन्होंने उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करके उसे बन्धन से मुक्त किया था -

''पुलस्त्याज्ञां प्रगृह्योचे न ञ्चिन वचोऽर्जुनः।
मुमोच वै पार्थिवेन्द्रो राक्षसेन्द्रं प्रहृष्टवत्॥'' 2

उस समय ऐसी मान्या थी कि पाप कर्म से देवता रुष्ट होंगे इसलिए मनुष्य कोई भी ऐसा कार्य नहीं करता था जो धर्मपूर्ण तथा शास्त्र विहित हो। यहाँ तक कि ऋषि-मुनि भी कुपित होने पर शाप देने में समर्थ थे। पुत्र शोक से पीड़ित दशरथ ने पुत्रशोक से व्याकुल कौशल्या को बताया कि बालस्वभाव के कारण मैंने पहले शब्दभेदी बाण मारकर मुनिकुमार का वधरूपी पाप किया था। उसी पापकर्म का यह फल उपस्थित हुआ। 3 मनुष्य शुभ या अशुभ जो भी कार्य करें, अपने उसी कर्म के फलस्वरूप सुख अथवा दुःख उसे प्राप्त होते थे 4 तथा जो कार्य को आरम्भ करते समय उसके फल की गुरुता या लघुता को नहीं जानता उसे मूर्ख माना जाता था -

''गुरुलाघवमर्थानामारम्भे ञ्र्मणां फलम्।
दोषं वा यो न जानाति स बाल इति होच्यते॥''5

1. वाल्मीकि रामायण, 7.33.13-16
2. वही, 7.33.17
3. वही, 2.64.58-59
4. वही, 2.63.6
5 वही, 2.63.7

रामायणकाल में देवी-देवताओं के प्रति लोगों में विश्वास था कि वे राज्य में अनुचित तथा अधर्मपूर्ण कार्य होने पर उस राज्य के राजा को दण्डित करते हैं तथा वह नरकगामी होता है। 1 राज्य में धर्म का पालन होने पर मनुष्यों की आयुवृद्धि और धन-धान्य में वृद्धि होने की मान्यता थी। 2 शंबूक नामक शूद्र ने जब रामराज्य में तपस्या की थी तो उसकी तपस्यारूपी अधर्मपूर्ण कार्य से एक ब्राह्मण बालक की अकाल मृत्यु हो गई थी तो उस ब्राह्मण ने विलाप करते हुए राम पर दोषारोपण किया था। 3 उसके इन वचनों को सुनकर राम ने शूद्र का वध किया था जिससे प्रसन्न होकर देवों ने उस बालक को पुनर्जीवित किया था। 4 इससे स्पष्ट होता है कि न्याय-व्यवस्था को बनाने के लिए देवताओं ने राजा को नियुक्ति किया था और वह प्रजा का सुव्यवस्थित पालन करता था। वह अपराध करने पर प्रजा को दण्ड भी देता था। 5 इस प्रकार देव आस्था, प्रजा-पालन और अन्याय अवरोधन का एक प्रमुख आधार था।

उस समय समाज में वर्ण-व्यवस्था का प्रचलन था। ब्राह्मण वेदाध्ययन, तप और पूजा-पाठादि धार्मिक कार्य करते थे एवं क्षत्रिय के लिए तप-युद्ध और राज्य में अच्छी व्यवस्था स्थापित करना धर्म कार्य माना गया। 6 अन्य वर्ग के लोग सेवा कार्य किया करते थे। वैश्य कृषि-व्यापारादि से और शूद्र सब वर्णों का विशेषरूप से पूजा-आदर सत्कार किया करते थे। 7 इन सब

1. वाल्मीकि रामायण, 7.74.30: करोति याश्रीमूलं तत्पुरे वा दुर्मतिर्नरः।
   क्षिप्रं च नरकं याति स च राजा न संशयः ।।
2. वही, 7.74.33
3. वही, 7.74.17-26
4. वही, 7.76.10-15
5. वही, 7.76.44
6. वही, 7.74.20
7. वही, 7.74.21

उद्धरणों से द्योतित होता है कि लोगों को व्यवस्थित करने के लिए वर्ण-व्यवस्था स्थापित की गई थी तथा लोग धर्मपूर्वक अपने-अपने कार्य में लगे रहते थे और उनमें एकता और भाईचारे की भावना बनी रहती थी। देव वर्ग पर विश्वास इस व्यवस्था को और अधिक सदृढ़ बनाने में सहायक होता था।रामायण काल में तप-दान और यज्ञ की अत्यधिक महिमा मानी जाती थी। लक्ष्मण ने राम से कहा कि तप ही परम कल्याण का साधन माना गया है, दूसरा सारा सुख तो मोहमात्र ही है। 1 समृद्धशाली और ऐश्वर्यवान् असुर राजा वृत्रासुर ने राज्य त्यागकर कठोर तपस्या रूपी महान् कार्य करके समस्त लोकों को जीत लिया था। 2 दान करने से भी महान् फल की प्राप्ति होती थी। 3 ब्राह्मण को छोड़कर सभी वर्णों के लिए यह लेना निन्दित कार्य था। 4 इसके बिना कोई भी तप फलदायी नहीं होता था। 5 देवता, पितर और अतिथियों के लिए दिया जाने वाला दान सब दु:खों से मनुष्य को तारने वाला बताया गया है। 6 राजा श्वेत ने अगस्त्य मुनि को अपने घृणित आहार की प्राप्ति का कारण उनके द्वारा कभी दान न करना बताया था। 7 राम ने लक्ष्मण को बताया कि राजा इल ने अश्वमेध के अनुष्ठान से पुरुषत्व की प्राप्ति की थी। 8 इसलिए हमारे द्वारा भी अक्षय-अविनाशी फल प्राप्ति के लिए और धर्म के पालन एवं समस्त पापों का नाश करने के लिए यह यज्ञ किया जाना चाहिए। ऐसे अनुष्ठान में उन्होंने याचक की सन्तुष्टि पर्यन्त उसे दान किया था। 9 रावण बहुत तपस्वी था वह भी यज्ञादि किया करता था। उसने ब्रह्मा को प्रसन्न करके गन्धर्व, यक्ष, देवता तथा राक्षसों से अवध्य होने का वर प्राप्त किया था। 10 इन सब तथ्यों से ज्ञात होता है कि देवता तप-दान और यज्ञ-पूजा पाठादि से प्रसन्न होकर अपने भक्तों की इच्छाओं को पूर्ण करते थे और लोग अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए, अपने परिवार के सुख के लिए, धन-धान्य, कृषि

1. वाल्मीकि रामायण, 7.84.9 तपो हि परमं श्रेय: सम्मोहमितरत् सुखम्॥
2. वही, 7.84.10-12
3. वही, 7.76.31
4. वही, 7.76.34: प्रतिग्रहोऽयं भगवन् ब्राह्मणस्याविगर्हित:।
5. वही, 7.78.15
6. वही, 7.78.16
7. वही, 7.78.14-17
8. वही, 7.90.7-19
9. वही, 7.78.15
10. वही, 1.15.13-14

और पशुओं की बढ़ोतरी के लिए इनकी स्तुति करते थे। दान और यज्ञ से लोग न केवल देवताओं को प्रसन्न किया करते थे; अपितु मनोवांछित फल की प्राप्ति के साथ-साथ उनमें त्याग तथा समर्पण का भाव भी जागृत होता था जो उनके जीवन को सुखमय बनाता था।

देवी-देवताओं से सम्बन्धित व्रतोपवास किए जाते थे और लोग नित्य संध्योपासना भी करते थे। जब राजा दशरथ ने अयोध्या में अपने ज्येष्ठ पुत्र राम के राज्याभिषेक का निर्णय लिया था तो कौशल्या ने इसे अपने व्रत-उपवास से प्रसन्न हुए विष्णु का फल माना था। [1] इसी अवसर पर राम ने श्रीनारायण की उपासना की थी, [2] अग्नि में हविष्य की आहुतियाँ दी थी 3 तथा प्रात: कालिक संध्योपसना-जप एकाग्रचित होकर किये थे। 4 इससे पता चलता है कि लोग व्रतोपवास तथा संध्यावन्दन किया करते थे तथा उन्हें इससे शारीरिक और आध्यात्मिक शान्ति एवं सुख की प्राप्ति होती थी। इस प्रकार तत्काल में देवी-देवताओं को सर्वमंगलकारी मानकर उनके दर्शाए गए मार्ग को सर्वोतम माना जाता था।

1. वाल्मीकि रामायण, 2.4.41
2. वही, 2.6.1
3. वही, 2.6.2: प्रगृह्य शिरसा पात्रीं हविषो विधिवत् तत:।
   महते दैवतायाज्यं जुहाव ज्वलितानले।।
4. वही, 2.6.6